अमरकण्टक : नर्मदा के उद्गम पर कोटि तीर्थ (पृष्ठ ४४)
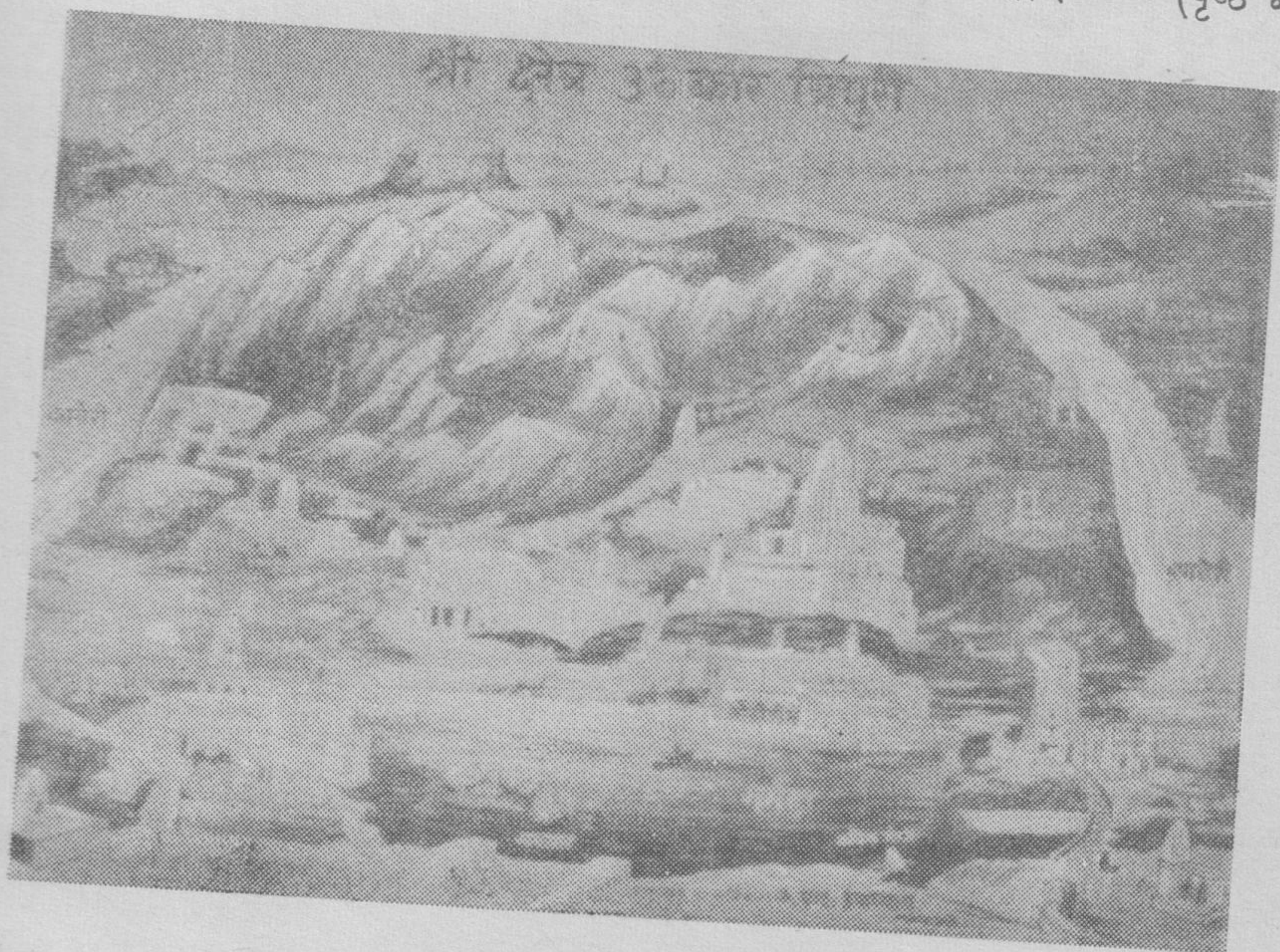
श्री ओंकारेश्वर
बाईं ओर कावेरी तथा दक्षिण की ओर नर्बदा के मध्य स्थित है। (पृष्ठ ४५)
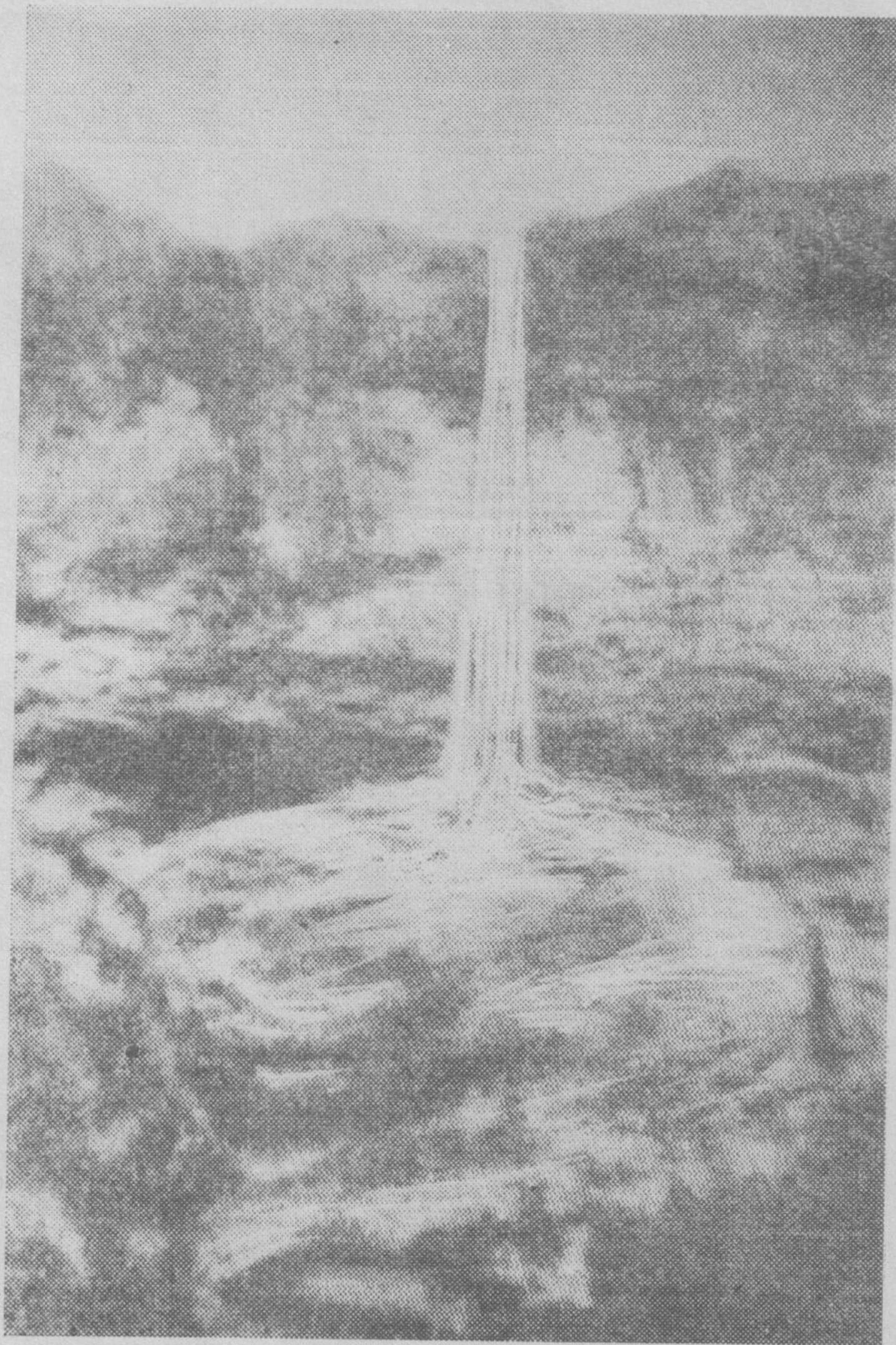
कपिल धारा प्रपात
अमर कन्टक के परिसर में

(पृष्ठ ४३)

भेड़ा घाट
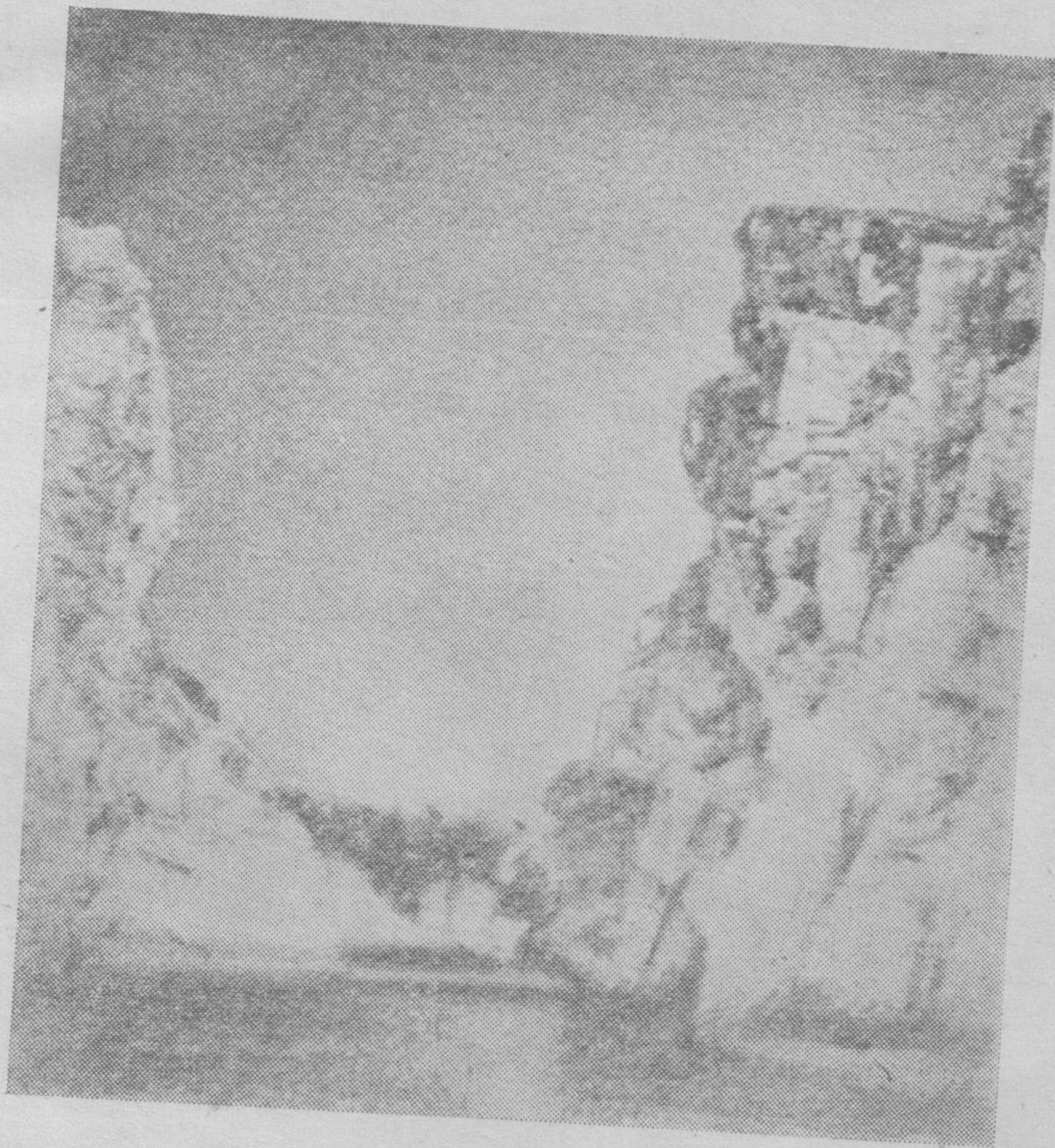
संगमरमर की चट्टानों में नर्मदा का प्रवाह

(पृष्ठ ४४)
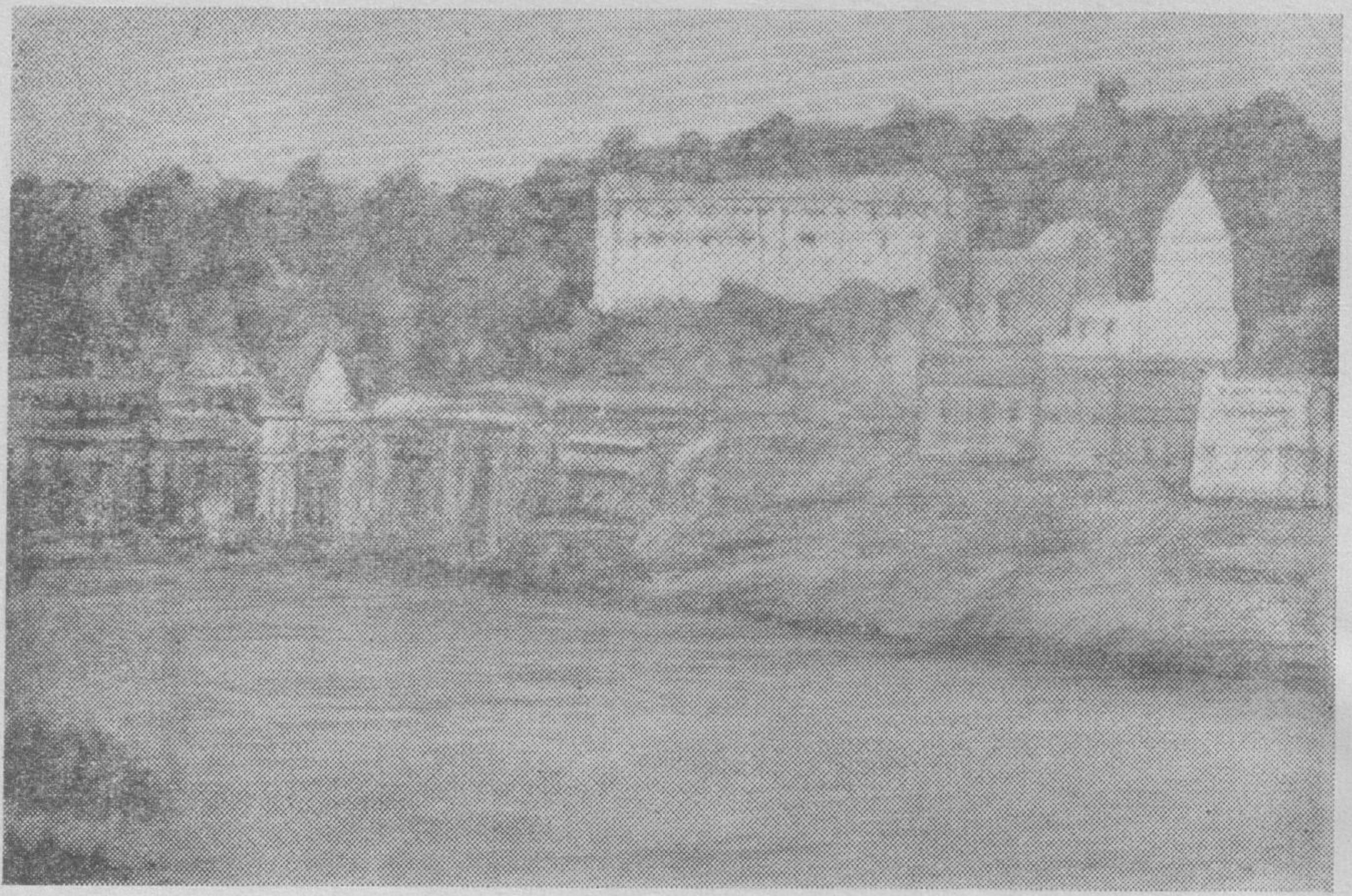
शिवपुरी : ओंकारेश्वर (पृष्ठ ४५)

माहिष्मती : सहस्त्रधारा की दिव्य सुषमा

माहिष्मती श्री अहिल्येश्वर मन्दिर
यहां ही शंकराचार्य और मण्डन मिश्र का शास्त्रार्थ हुआ।

(पृष्ट ४६)

कामाख्या मन्दिर, गोहाटो
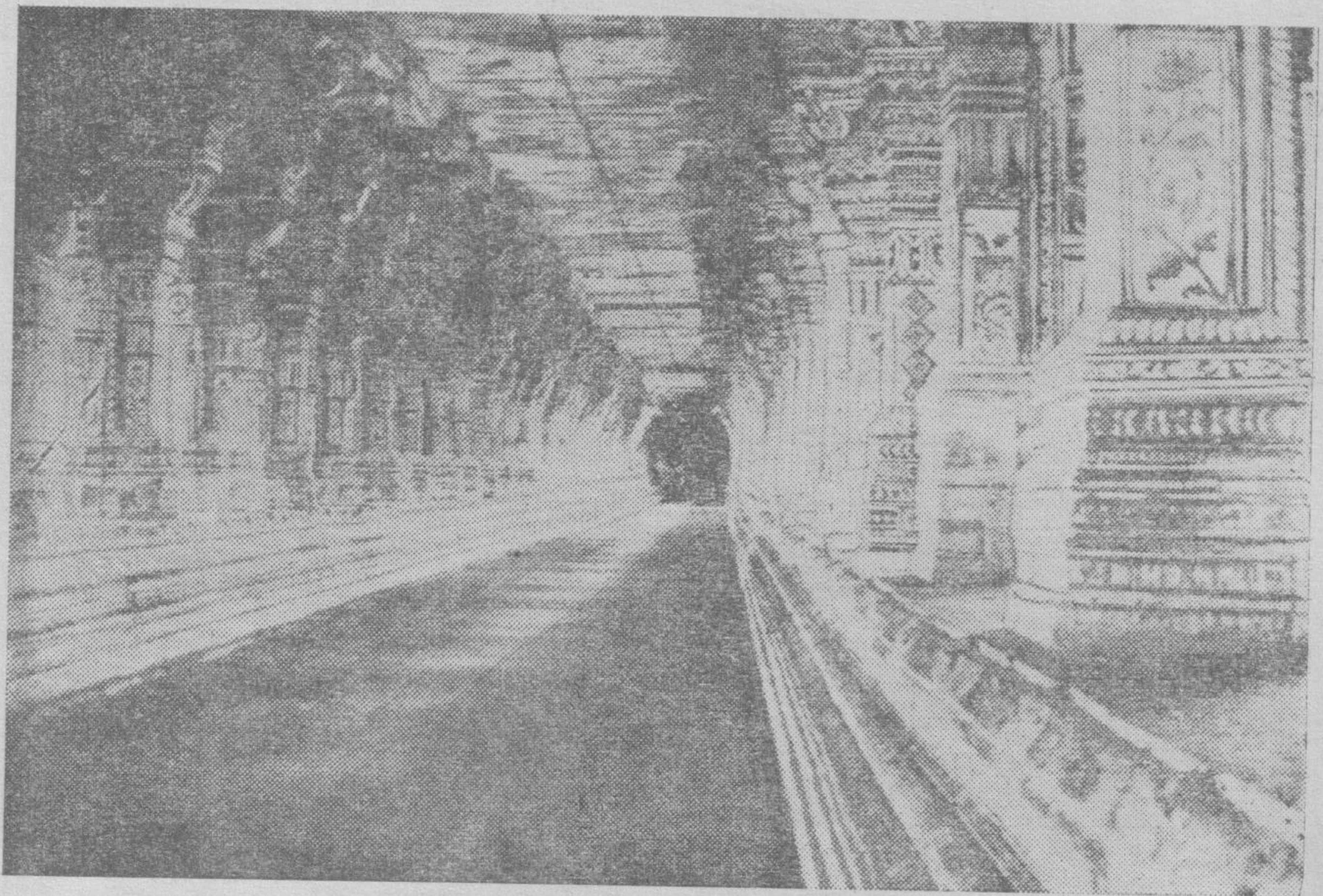
श्री रामेश्वरम् : भारत की दक्षिण सीमा के छोर पर स्थित
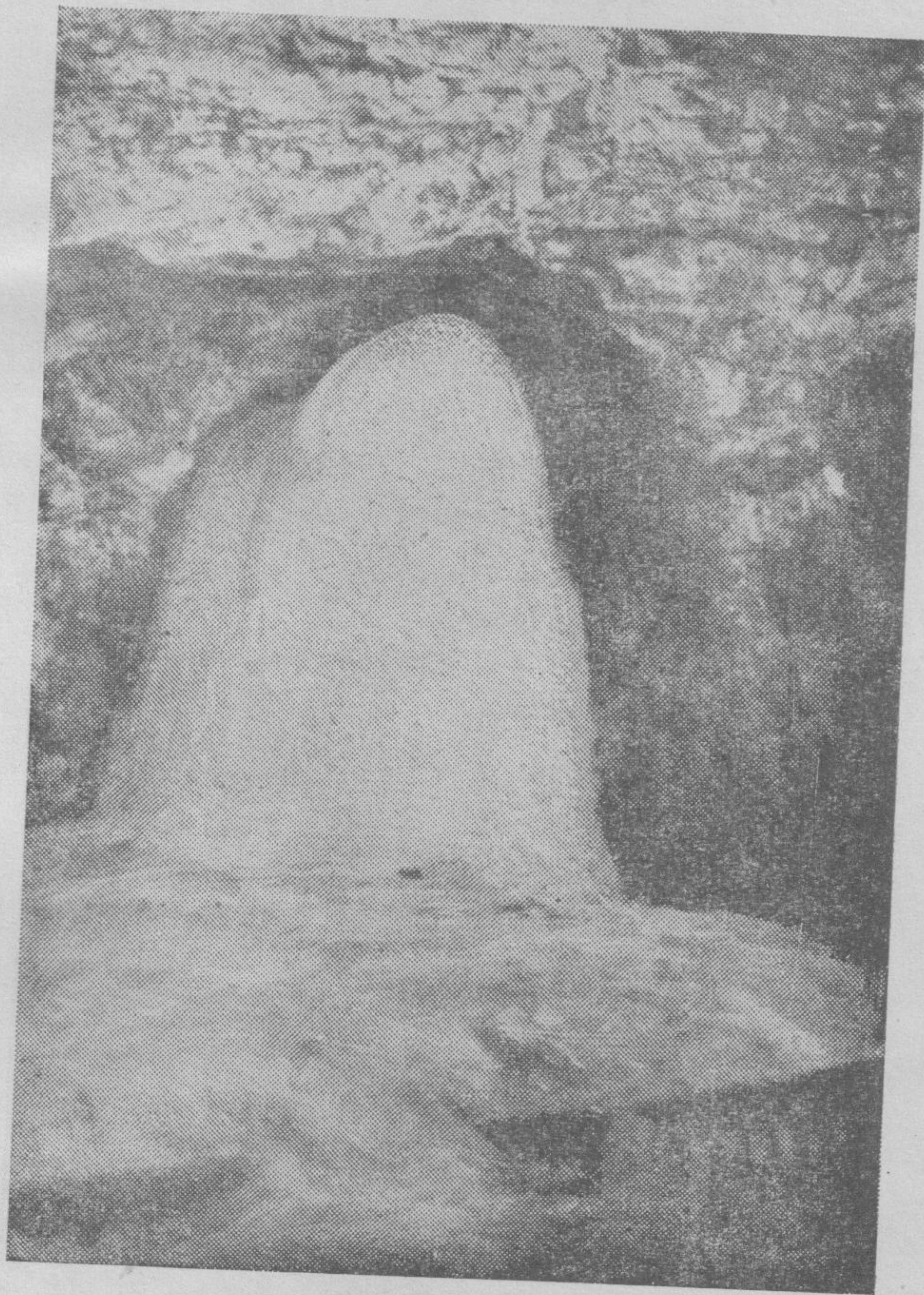
अमरनाथ
काश्मीर की तीर्थ गुफ़ा में बर्फ का शिवलिंग
(पृष्ठ २०८)

गंगोतरी मन्दिर

गंगा के उद्गम गोमुख से १२ मील पहले

(पृष्ठ २२१)

श्री केदारनाथ मन्दिर, जिस के परिसर शिवपुरी में योगिराज दयानन्द ने शीत बिताया। (पृष्ठ २२१)
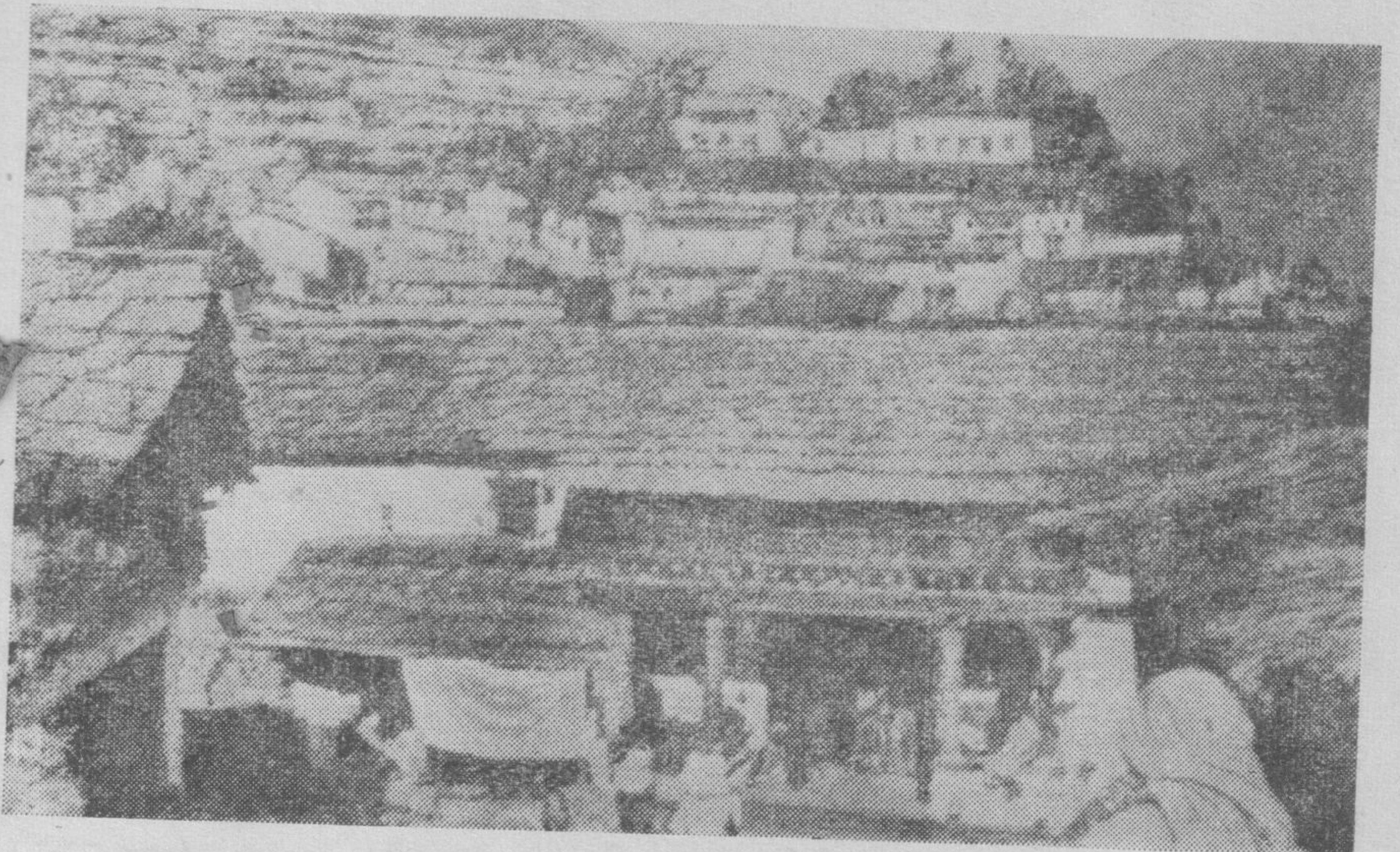
जोशी मठ, शंकराचार्य के चार धामों में से एक (पृष्ठ २२१)
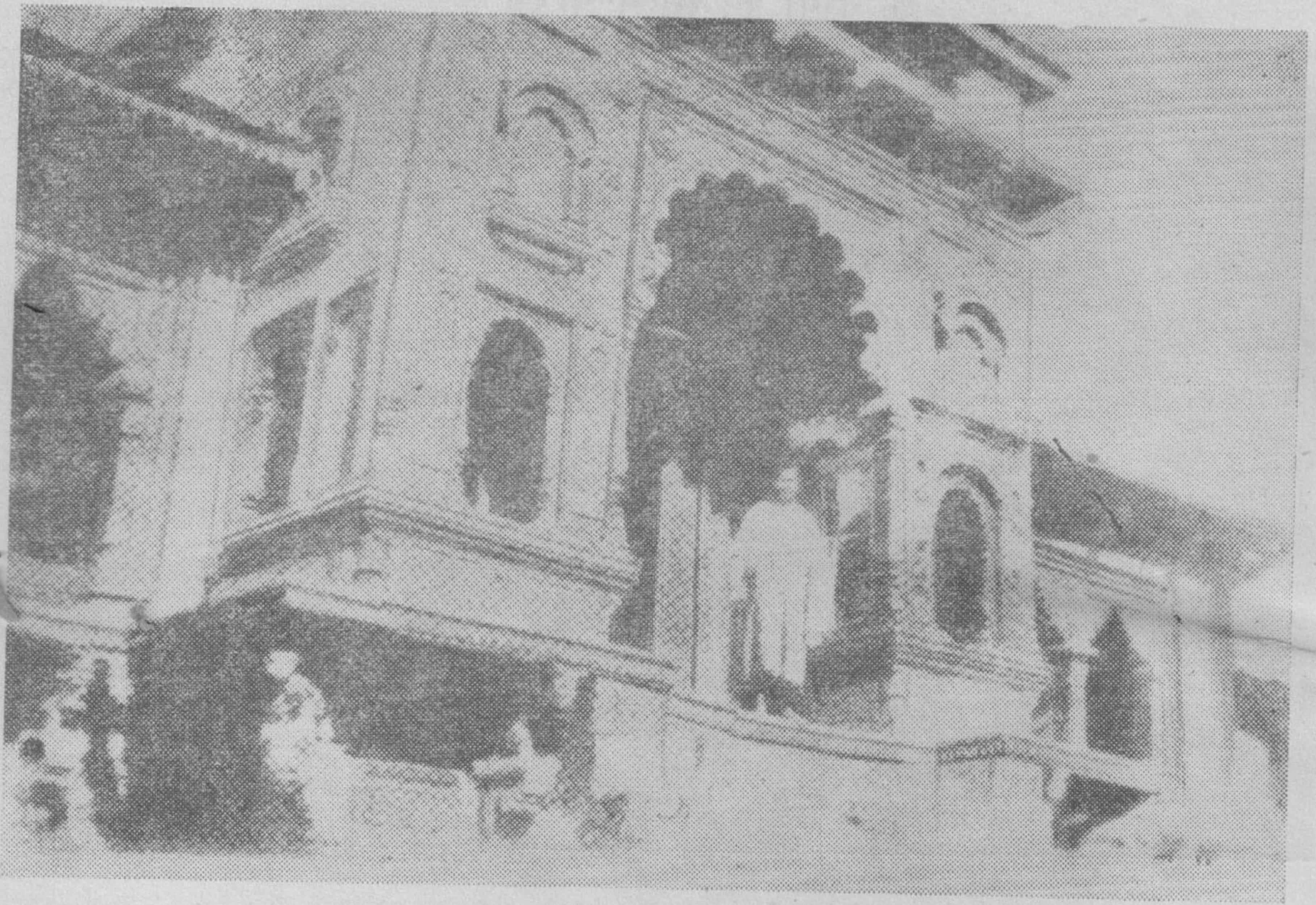
श्री बद्रीनाथ, जहां से योगीराज दयानन्द ने अलकनन्दा स्रोत की यात्रा की। पृष्ट २२१
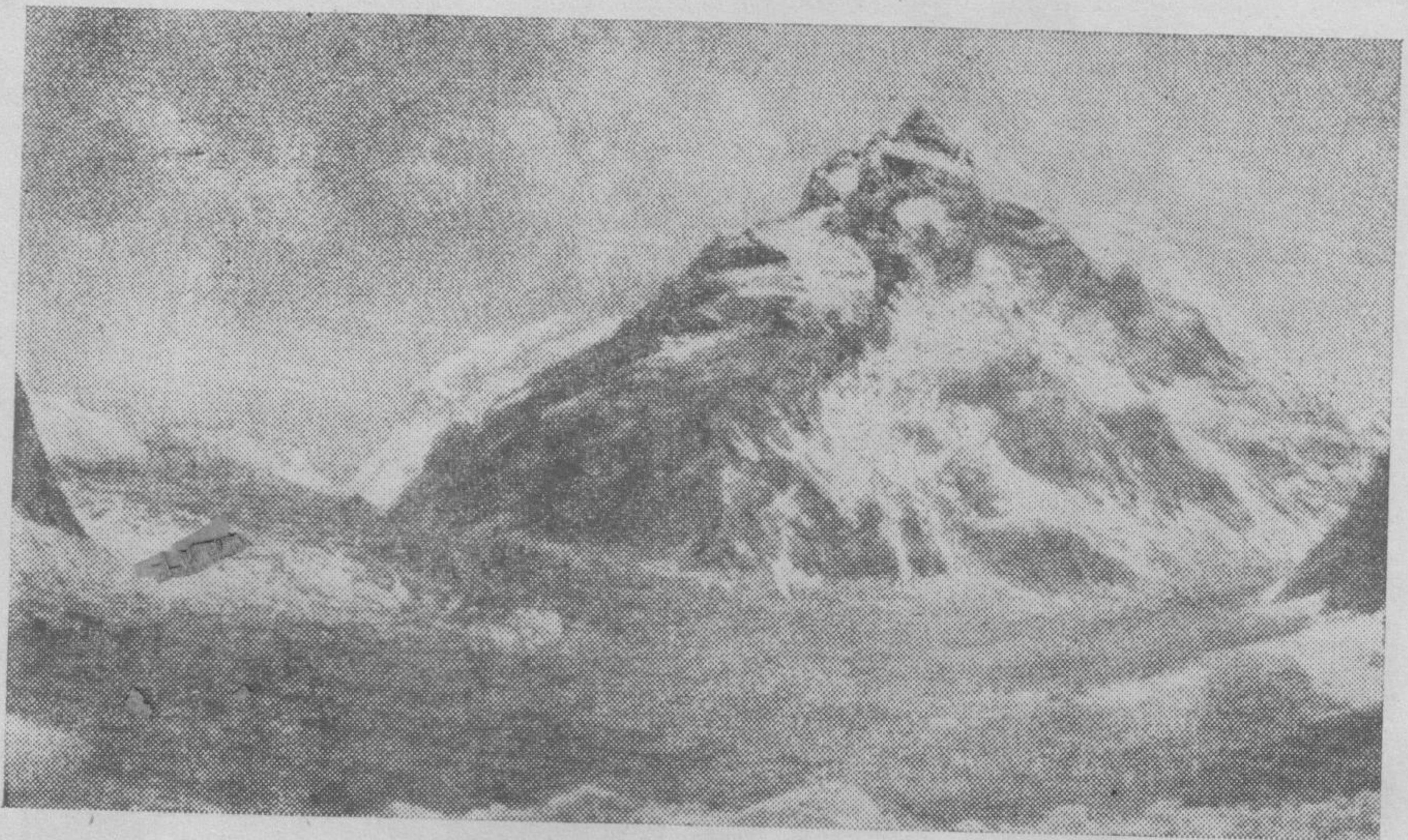
अलकनन्दा का उद्गम, जिसे देख एक वसनधारी योगीराज १२ घंटे में लौटे। यह हिम यात्रा पूरे तम्बू, सेवक, कुली, सामग्री के साथ साधारणतया एक मास में कोई माई का लाल ही कर पाता है। (पृष्ठ २२२)

वसु धारा

श्री बद्री नारायण से केवल ५ मील पूरे सामान के
साथ पूरे एक दिन की यात्रा

(पृष्ठ २२२)
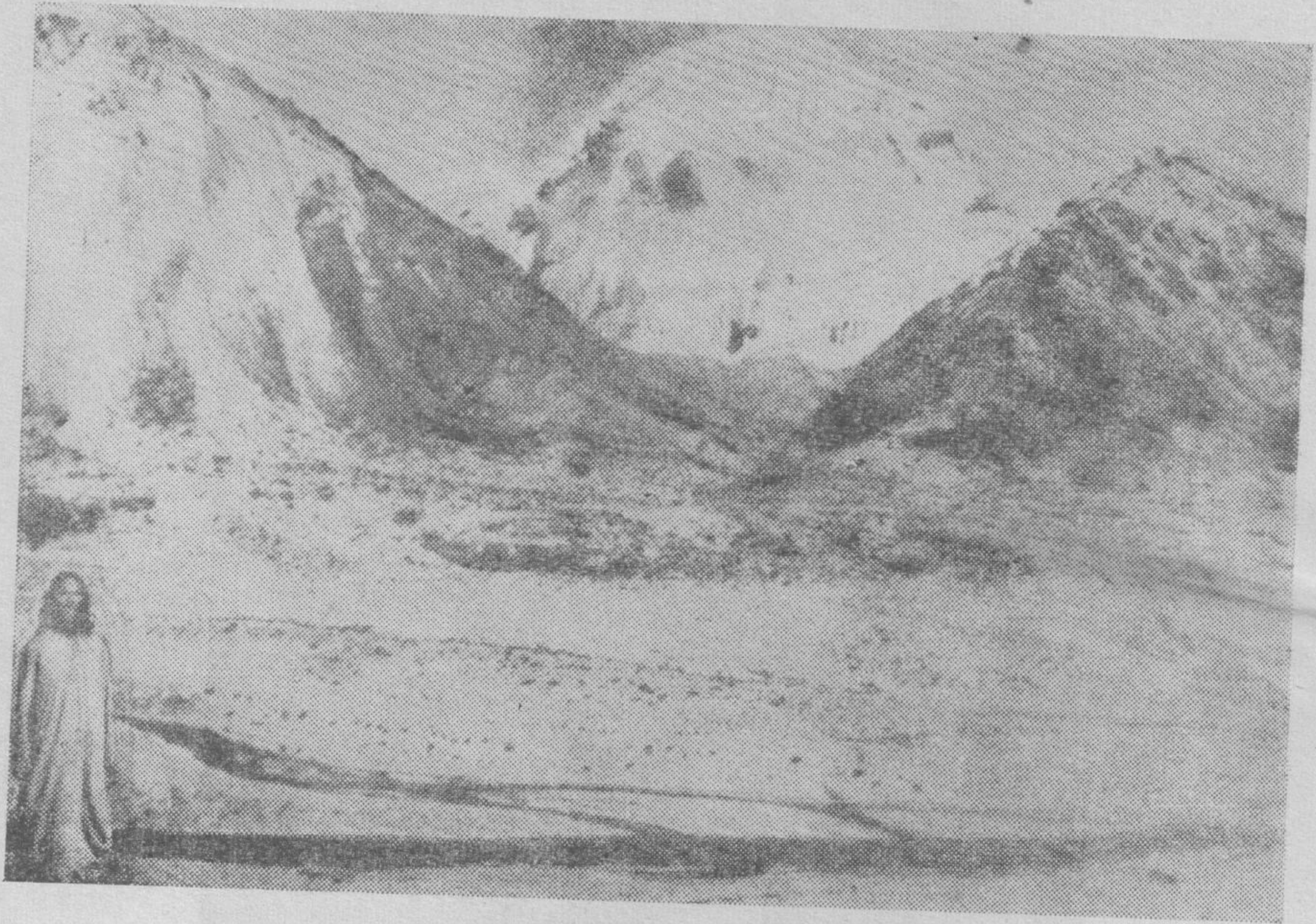
कैलाशाधिपति महादेव योगीश्वर की तपोभूमि कैलाश (पृष्ठ २२२)

◆
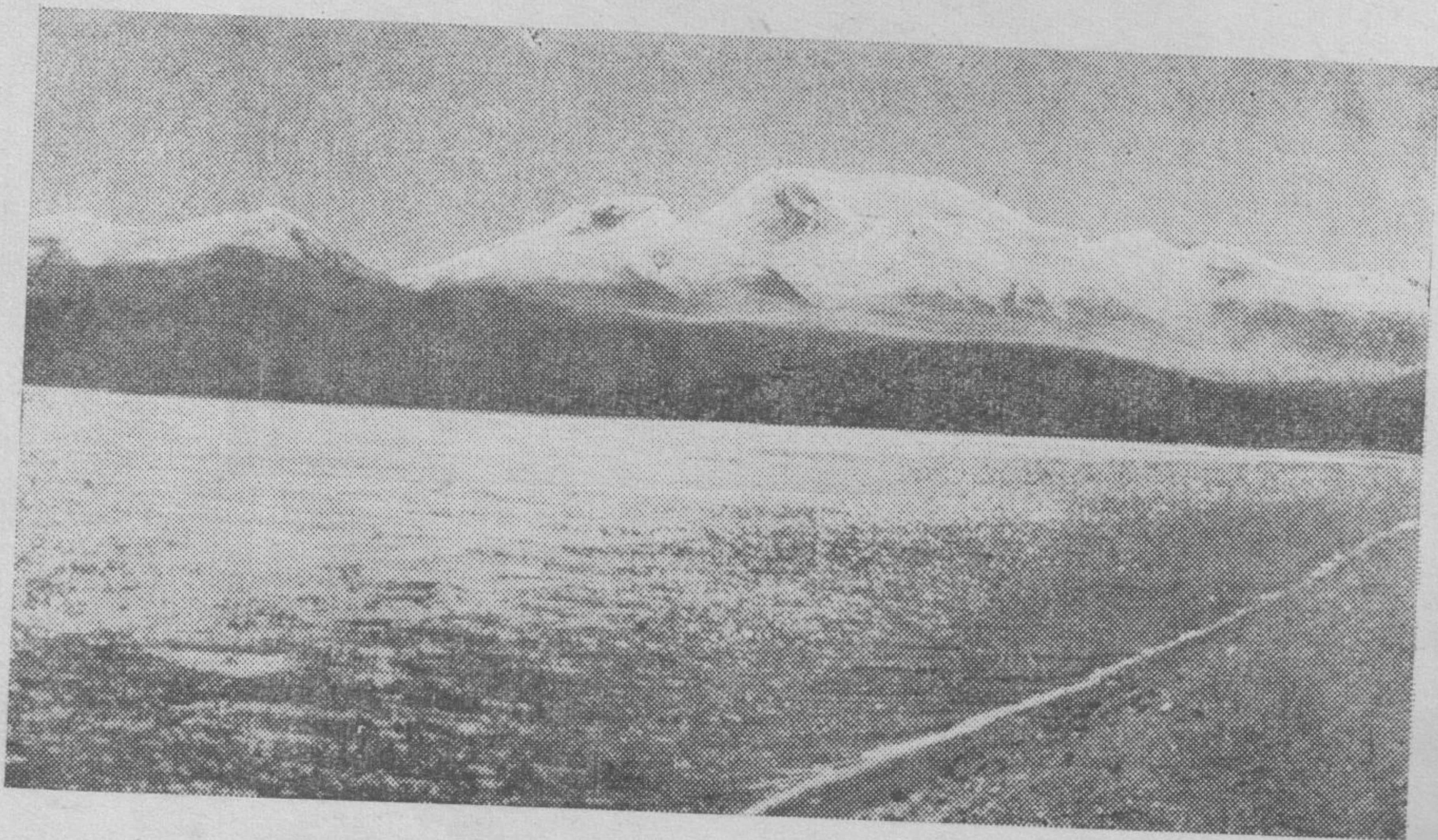
तरङ्गित राक्षस ताल : पृष्ठभूमि में मानधाता पर्वत है। (पृष्ठ २२२)

शुभ प्रशस्ति

स्व० डा० आचार्य पं० देवदत्त शर्मोपाध्याय एम० ए०

विद्या-भास्कर, वेदान्ताचार्य सं० हि० डि० फिल, प्राचीन, नवीन व्याकरणाचार्य, वाराणसी, भू०पू० अध्यक्ष—प्राचीन व्याकरण दर्शनागम-विभाग, वाराणसेय संस्कृत विश्व विद्यालय
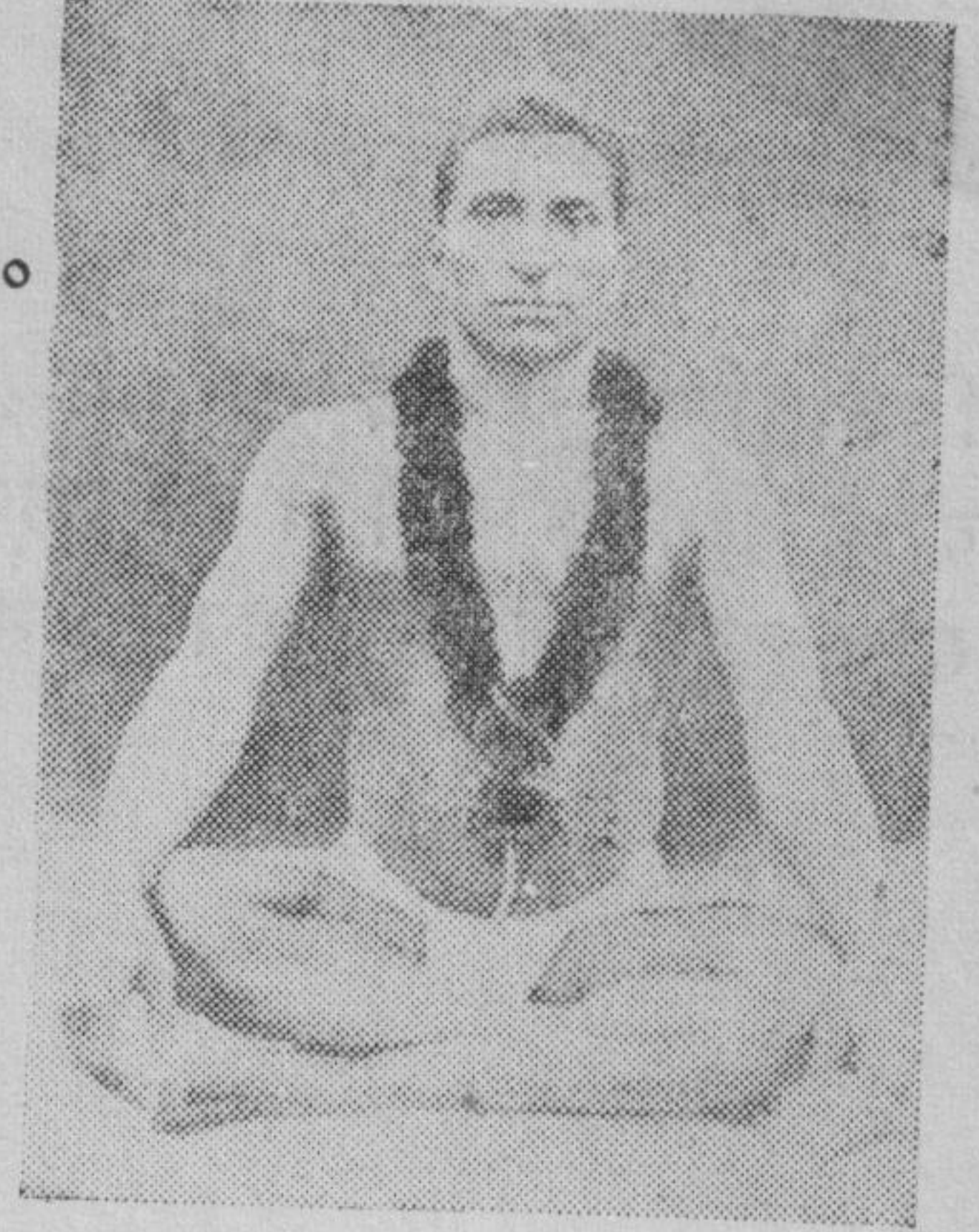
महामहिम योगिराज श्री स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती जी महाराज और मैंने प्रातः स्मरणीय महाविद्यालय के कुल पति महर्षि श्री स्वामी शुद्धबोध तीर्थ जी महाराज से वेद व्याकरण साहित्य और दर्शन आदि की उच्च शिक्षा प्राप्त की थी अतएव योगी राज स्वामी जी का वैदिक एवं शास्त्रीय ज्ञान मुक्त कण्ठ से प्रशंसनीय है।

हिन्दी योग दर्शन

"श्री योगेश्वर महाराज ने यह 'शुद्ध बोध वृत्ति' सहित हिन्दी योग दर्शन का निर्माण किया है। वह जनता के लिए अत्यन्त कल्याणकारी है। इसमें स्वामी जी ने अपनी अनुभूतियों के आधार पर योग के सच्चे अर्थ का दिग्दर्शन कराया है। चित्तवृत्ति निरोध से लेकर समाधि पर्यन्त सर्व विषयों का अनुभव सिद्ध उल्लेख है। योग सिद्धियों का सुन्दर सारभूत तथ्य चित्रण है। पता चलता है योगिराज ने अपने जीवन में योग का बहुत अनुभव प्राप्त किया है। सत्य सार खींचकर रख दिया है। ऐसी पुस्तकें ही योग की कठिन से कठिन गुत्थियों को सुलझाने में समर्थ हो सकती है।

—ह० देवदत्त शर्मोपाध्याय

मन्त्र योग साधना

योग साधना का अमोघ मन्त्र इसमें दिया गया है। वेदशास्त्र उपनिषद ब्राह्मण ग्रन्थों के १००० मन्त्रों में इस मन्त्र का विधान बताया है। जप विधि बताई है। संसार के समस्त आस्तिकों ने इस मन्त्र को स्वीकार किया है। यह मन्त्र ही ध्यान योग-का ध्रुव माध्यम है। विधि विधान मनोकामना पूर्ण करने की पूर्ण विधि दी है।

—'-योगिराज महाराज जी ने योग के इन छोटे-छोटे ग्रंथों में सिद्धांतों की अमूल्य निधियाँ और योग की अद्वितीय निधियाँ निहित कर दी है योग के साधकों को इनका अनवरत स्वाध्याय करना चाहिए। तभी साधक वृन्द का अभ्युदय हो सकता है।

—ह० देवदत्त शर्म्मोपाध्याय

—१६७०

मूल्य—केवल ६०-००, मन्त्रयोग साधना

८०-०० हिन्दी योग दर्शन

१·२५ पातञ्जल योग साधना

—व्यवस्थापक

सात्त्विक दानी

डा० देवराज सूरी

आर्यनगर, रोहतक

ब्रह्मचारी श्री कृष्णदत्त जी की

सद्भावना

सिद्ध योगी, द्वापर कालीन महर्षि शृंगी की अवतीर्णआत्मा अशिक्षित संस्कारी जीव श्री ब्रह्मचारी जी

ओउम
योगी श्री स्वामी सच्चिदा
न्द जी महाराज ने जो
परिश्रम करके स्वामी
दयानन्द जी सरस्वती
की अज्ञात जीवनी
छापी है वह प्रशंसनि
य है

ब्रहमचारी
कृष्णदत
13-11-71

॥ ओउम् ॥

योगी श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज ने जो परिश्रम करके स्वामी दयानन्द जी सरस्वती की अज्ञात जीवनी छापी है वह प्रशंसनीय है

ब्रह्मचारी

कृष्णदत्त

१३ ११ ७१

॥ ओ३म् ॥

पूज्यपाद महात्मा आनन्द भिक्षु जी महराज का योग अभिनन्दन

श्री महामान्यवर, आदर्श योग निष्ठ, तपोमूर्ति,
योगिराज श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज !

सादर नमस्ते !

अत्र कुशलं तत्रास्तु। आप का कृपा पत्र मिला। हार्दिक धन्यवाद। अब आपके आजाने से मण्डल का कल्याण होगा। आप जिस महान् कार्य में लगे हुए हैं, उससे हमारा भविष्य बनेगा।···· साधु बिना साधना के नहीं बन सकता। आप जैसे निर्भीक साधुओं से आर्य समाज का कल्याण होगा।

समाचार पत्रों द्वारा विदित हुआ, आप कर्तारपुर में अध्यात्म शिविर लगा रहे हैं। में भी श्री चरणों में उपस्थित होने का पूर्ण प्रयत्न करूँगा। अभाग्यवश देहली में आपके दर्शन न कर सका।······जब सौभाग्य उदय होगा तो मैं भी आपके चरणों में उपस्थित हो जाऊँगा।
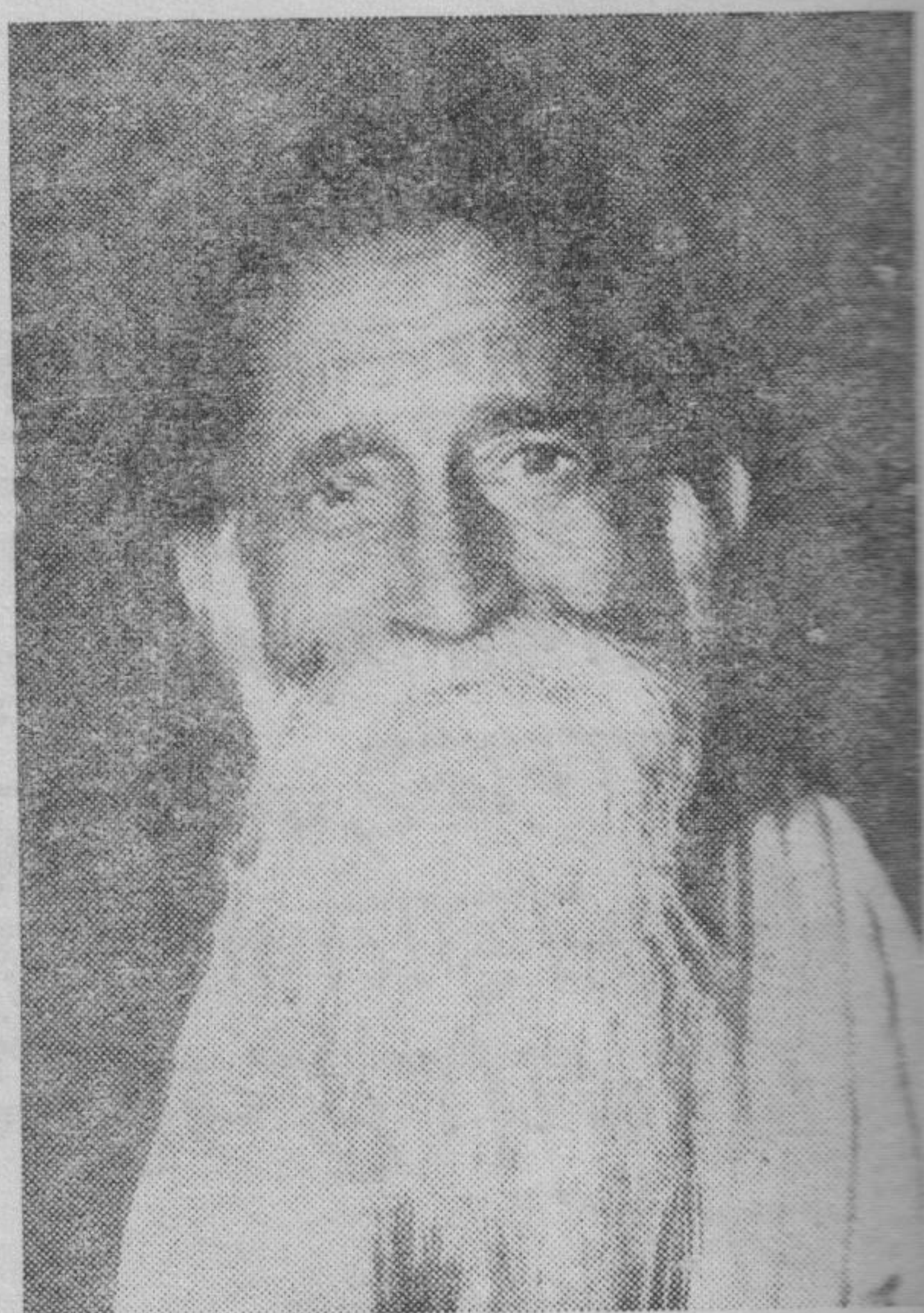
कृपाभिलाषी

योग्य सेवा से कृतार्थ करें।

आर्य समाज व्यावर
राजस्थान
२५-६-६९

आनन्द भिक्षु वान प्रस्थ

॥ ओ३म् ॥

लेखक और खोजी का परिश्रम'

श्री १०८ स्वामी विज्ञानानन्दजी सरस्वती

प्रभु की सृष्टि में जीवन सफल उसी का है जो अपने ऊपर कष्ट उठाकर भी दूसरों का कल्याण करते हैं तभी तो कहा है—

"परोपकाराय सतां विभूतयः ।"

—सज्जन पुरुषों की पहचान ही यही है, कि वह हर हाल काल में उपकार ही करते हैं।

श्री स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती 'योगी' उनमें से एक हैं। आपको योग की चिरकाल से लग्न थी और उसकी प्राप्ति के लिए अनेकों तद्विषयक ग्रन्थ पढ़े, अनेकों द्वारों का खटखटाया, परन्तु सन्तुष्टि न हुई महर्षि दयानन्द का अनुयायी भला अपनी आत्मिक सत्य-पिपासा को बुझाये बिना कैसे शान्त रह सकता है। फारसी में कहा है—
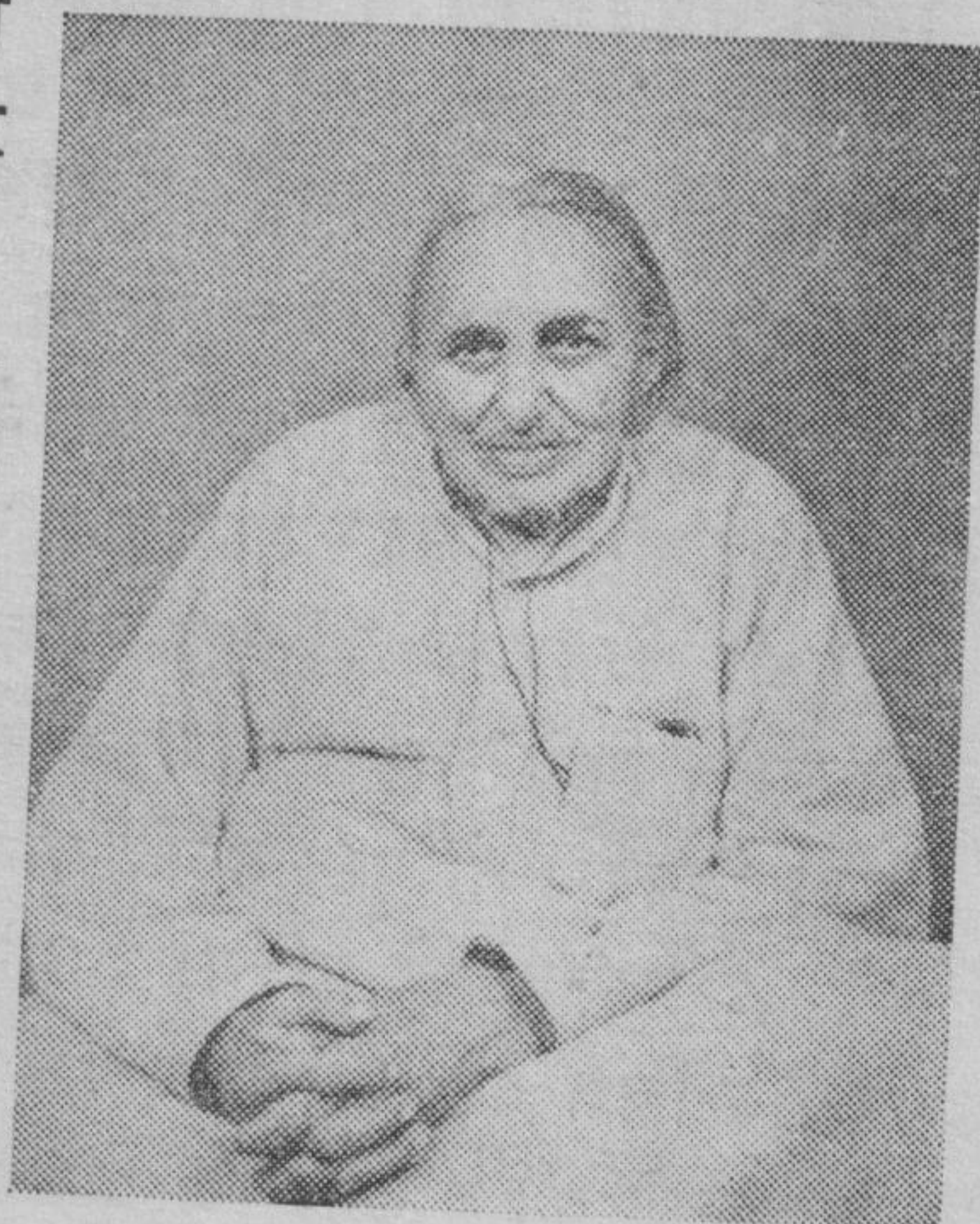
'जो इन्दा, पाइन्दा'

—जिन खोजा तिन पाइयां।

पं० दीन बन्धु शास्त्री बी. ए. आचार्य, आर्य समाज, कलकत्ता का बड़ा धन्यवाद है, कि उन्होंने वर्षों की खोज के बाद महर्षि दयानन्द की ३९ वर्ष की अज्ञात, रहस्यपूर्ण जीवनी को खोजकर 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक पत्रिका में क्रमशः (दो वर्ष में) जनता को भेंट किया। आर्य जगत् को और बिशेषकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को उनकी इस अमूल्य सेवा के लिए अत्यन्त आभार प्रकट करते हुए, उन समस्त लेखों को पुस्तकाकार

कर जनता जनार्दन को महर्षि की अज्ञात जीवनी से कृतकृत्य करना था, परन्तु हमें ज्ञान नहीं कि उपरोक्त आचार्य जी का आभार भी प्रगट किया गया है या नहीं। इतना ज्ञान तो है कि सार्वदेशिक के कर्णधारों ने उन लेखों को पुस्तक रूप देने से निषेध कर दिया, और एक आर्य समाज प्रतिनिधि सभा के एक विद्वान् ने यहाँ तक कह दिया कि यह सब कथा मन घडन्त है। उसे नारकीय रूप दिया गया है।

जमाने की नौरंगी (दो रुखी चाल) देखिये, आप करें कुछ न, दूसरा करे तो उसके मार्ग में बाधायें खड़ी कर दें, परन्तु धीर वीर विपत्तियों की परवाह नहीं करते हैं, स्वागत करते हैं, उनका स्वागत करते हैं और साथ ही प्रतिकार करते हैं। उनसे जूझकर विजयी होते हैं।

श्री पूज्य स्वामी सच्चिदानन्द योगी ने हमारे साथ निश्चिय कर लिया था, कि महर्षि की 'अज्ञात जीवनी' अवश्य छपवानी है। मैंने उन्हें अश्वासन दे रखा था। पुस्तक प्रेस में देने के लिए मेरे पास पहुँच चुकी थी कि उर्दू के साप्ताहिक 'वैदिक धर्म, में उसी आर्य विद्वान ने 'अज्ञात जीवनी, को असत्य, मन घडन्त और अविश्वसनीय बताया। स्वामी जी ने कलकत्ता में जाकर पुस्तक का मैटर मुझ से मंगवाकर प्रत्येक घटना तथा सत्यता की दर बदर फिर कर सम्पुष्टि की। बंगला में लिखे पुराने लेख जो श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जी श्री केशव चंद्र सेन आदि महानुभावों से प्राप्त किये गए थे, उन के अंशों का फोटो करा लिया। जिन सबका पूरा विवरण तो पुस्तक की पृष्ठभूमि में आपको पढ़ने को मिलेगा।

पुस्तक को बढ़िया कागज पर छपवाने और फिर ५० के लगभग रंगीन चित्र देने, नये डिजाइन बनवाने, ब्लाक बना छपवाने, सुन्दर, सुदृढ़ जुजबन्दी की बढ़िया जिल्द बनवाने में लगभग १५हजार रुपए की आवश्यकता थी। यह कैसे पूरी हो।

यति के पास अपनी भिक्षा भेंट का ३०००) रु० था। २०००) रु० वान प्रस्थ आश्रम ज्वाला पुर से प्राप्त हुआ। ५०००) रु० लेकर पुस्तक छपवानी आरम्भ कर दी और मात्रजल पायी बन कर फल, दुग्ध, अन्न का परित्याग कर, अपने योगाभ्यास को भी कमकर पुस्तक के लिए धन की समस्या का समाधान ढूंढने लगे। रोहतक पधारे और मुझ से बातचीत हुई।

जिस कार्य में प्रभु प्रेरणा कार्य कर रही होती है उसके साधन वह स्वयं जुटाता है। वन्दनीय महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की कथा

आश्रम में हो रही थी। श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी भी पधारे ही थे। महात्मा जी ने इस पवित्र कार्य के लिए १०००) रु० की राशि अपने कोषसे देनी की। मेरे जामात चिरंजीव जगदीश चन्द्रजी डावर तथा पुत्री श्रीमती देव प्रभा जोने २०००) रु० की राशि, श्री डाक्टर देवराज जी सूरी तथा उनकी सहचारिणी माता लीलावती सूरी ने १०००) रु० देना किया फुटकर राशि और १०। १० रु० अग्रिममूल्य देकर ग्राहक अनेकों बनने लगे।

अब प्रभु कृपा से यह पुस्तक श्री योगी जी महाराज की ३०० पृष्ठ के गवेषणामय निबंध केसाथ शीघ्र छपकर आर्य जनता के हाथों में पहुँच रही है। हमारा विश्वास है कि जो भी आर्य भाई अपने आपको ऋषि दयानन्द का भक्त कहता है और स्वल्प सी भी निष्ठा उनके चरणों में रखता है, वह अपना और संसार का कल्याण तभी कर सकेगा जब स्वयं इस पुस्तक को पढ़ेगा। दूसरों में प्रचार करेगा। वह स्वयं ही लेखक और खोजी के परिश्रम की सराहना करेगा और ऋषिचरणों में सीस झुकाने पर बाधित हो जायेगा।

भगवान करे हमारा यह अनुमान सत्य सिद्ध हो।

पुस्तक छपवाने की सारी जिम्मेदारी का भार वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक ने अपने ऊपर ले लिया है। प्रभुदेव सहाई हों।

रोहतक　　　　　　　　　　　　निवेदक
२१-१०-७१　　　　　　　　　　विज्ञानानन्द सरस्वती

पातञ्जल योग साधना

मूल्य १·२५

महर्षि पतंजलि प्रणीत योगसूत्र और उस पर 'व्यास भाष्य' को परम प्रमाण मानकर प्रस्तुत पुस्तिका में सरल भाषा में योग साधना की क्रियात्मक शैली का उपदेश है। लेखक के अनुसार वृत्तिरहित होना या सबकुछ भगवान् पर छोड़ देना ये ही दो योग की पगडंडियाँ हैं। बिना तप और वैराग्य के योग सिद्ध नहीं होता। योगी रोगी नहीं होता, भोगी योगी नहीं हो सकता योग का गुरु परमात्मा है। अन्ध श्रद्धा वाले योग भक्तों को गुरुडम सेबचने की चेतावनी है आध्यात्मिक जप तप से रोग नाश होता है। प्रचलित प्राणायाम और आस नयोग के लिए अनिवार्य नहीं। व्यावहारिक

और अनुभव सिद्ध विचार हैं। योग तथा प्रेमियों जज्ञासुओं के लिए लाभदायक हैं।

—हिन्दुस्तान दैनिक ७ जून १६७०

—"प्रस्तुत पुस्तिका श्री पतंजलि मुनि प्रोक्त 'पातंजल योगसूत्र' के सिद्धान्तों पर आधारित है। जिनको स्वामी जी महाराज ने स्वानुभव से संकलित करके यहां प्रकाशित किया है।···पुस्तक संग्रहणीय तथा उपयोगी है। प्रत्येक श्रेयोऽभिलाषी को अवश्य पढ़नी चाहिए।"

'लोकालोक' मासिक

—कमला नगर, देहली, आषाढ़ २०२७,

विश्व विख्यात, विश्वयात्री, विश्व वेदोपदेशक

श्री श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के हृदयोद्गार

'दिसम्बर १९७० में जब मैं कलकत्ता गया तो पं० दीन बन्धु जी ने मुझे वह सारी सामग्री दिखाई जिससे महर्षि दयानन्दजी की 'अज्ञात जीवनी' का पर्याप्त पता लगता है। दिल्ली लौटकर आने पर मैंने स्वामी सच्चिदानन्द 'योगी' सरस्वती से प्रार्थना की कि आप कलकत्ता पधारिये और सामग्री के विषय में अनुसन्धान करके किसी तथ्य पर पहुँचिये।

स्वामी सच्चिदानन्द जी ने धर्म शास्त्रों का भली भाँति अध्ययन अध्यापन किया है। वे योग मार्ग के अनुभवी पथिक हैं। ऐसे महानुभाव ही परमयोगी दयानन्द की जीवनी के सम्बन्ध में निश्चित बात कह सकते हैं।

उन्होंने कलकत्ता में सवा मास निवास करके उपर्युक्त सामग्री का अनुशीलन किया और एक पुस्तक तैयार की, जिसके तैयार करने में स्वामी

जीवन की वह गाथाय जो अब तक रहस्य में थीं इस आत्मचरित्र के द्वारा प्रगट कर दी गयी हैं।

स्वामी सच्चिदानन्द जी का यह परिश्रम सराहनीय है। निश्चित रूपेण दुनिया के लोग देख सकेंगे कि महर्षि दयानन्द क्या थे? उन्होंने अपना जीवन कितनी तपश्चर्या और योगसाधना से बनाया था। अन्त में

'वेदोऽलिखो धर्म-मूलम्'

के अनुसार वेद ही को सारी दुनिया की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का स्रोत बताया।

स्वामी सच्चिदानन्दजी ने जो भूमिका लिखी है उसके अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि महर्षि दयानन्द ने स्वातन्त्र्य संग्राम में क्रियात्मक रूप से भाग लिया। यह भूमिका दुनियाँ की आँख खोल देगी। यह भूमिका क्या है? ऋषि दयानन्द के जीवन पर अकाट्य गवेषणा पूर्ण निबन्ध है।'

आनन्द स्वामी सरस्वती
११-१०-७१

"श्री स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती योगी चिरकाल से योग साधना में लगे हैं। योग पथ पर चलते हुए उन्हें कितने ही व्यक्तिगत अनुभव हुए हैं और सर्वसाधारण के कल्याण के लिए ही योग सम्बन्धी कितने ही ग्रन्थों की रचना की है। उनमें से—

१. पातञ्जल योग साधना
२. ओं मन्त्र योग साधना
३. हिन्दी योग दर्शन

४. योग दर्शन पर (चार योगेश्वरों के भाष्य का संकलन) प्रेस में—इनमें पातंजल योग दर्शन पर चारों योगेश्वरों—(व्यास, दयानन्द, शंकर, भगवान् कृष्ण) का भाष्य-संकलन सबसे महत्वपूर्ण है। गम्भीर है। नई सूझ-बूझ है। नया अन्वेषण है। (एक सूत्र भाष्य नमूना)

गम्भीरता से स्वामी जी महाराज ने अनुसन्धान करके योग की घुण्डियां खोली हैं। योग पथ पर चलने वालों के लिए इन पुस्तकों का अध्ययन बहुत आवश्यक है।

२७-९-७० ह० आनन्द स्वामी सरस्वती

विरजानन्द स्मारक
कर्तार पुर

कुल पृष्ठ संख्या=१५२+३३४=४८६

ॐ

गुरु देव का आशीर्वाद
श्री १०८ योगीराज स्वामी योगेश्वरानन्द
सरस्वती जी महाराज

उत्तराखण्ड की महान् विभूति

संस्थापक योग निकेतन-गंगोत्तरी, उत्तरकाशी, मुनि की रेती

योग के विश्व-प्रसारक

जिन के प्रश्रय में योग तथा सन्न्यास की शुभ्र पुण्य मयी दीक्षा ली। सदा आशीर्वाद, स्नेह और गौरव प्राप्त किया। गुरुदेव के चरणों में शतशः प्रणाम। गुरु देव का आशीर्वाद सदा शिरोधार्य है।

अन्तेवासी

—सच्चिदानन्द स्वामी योगी

ॐ

विनम्र भेंट

सर्व श्री स्वामी प्रकाशानन्द जी सरस्वती महाराज के चरणों में यह विनम्र भेंट
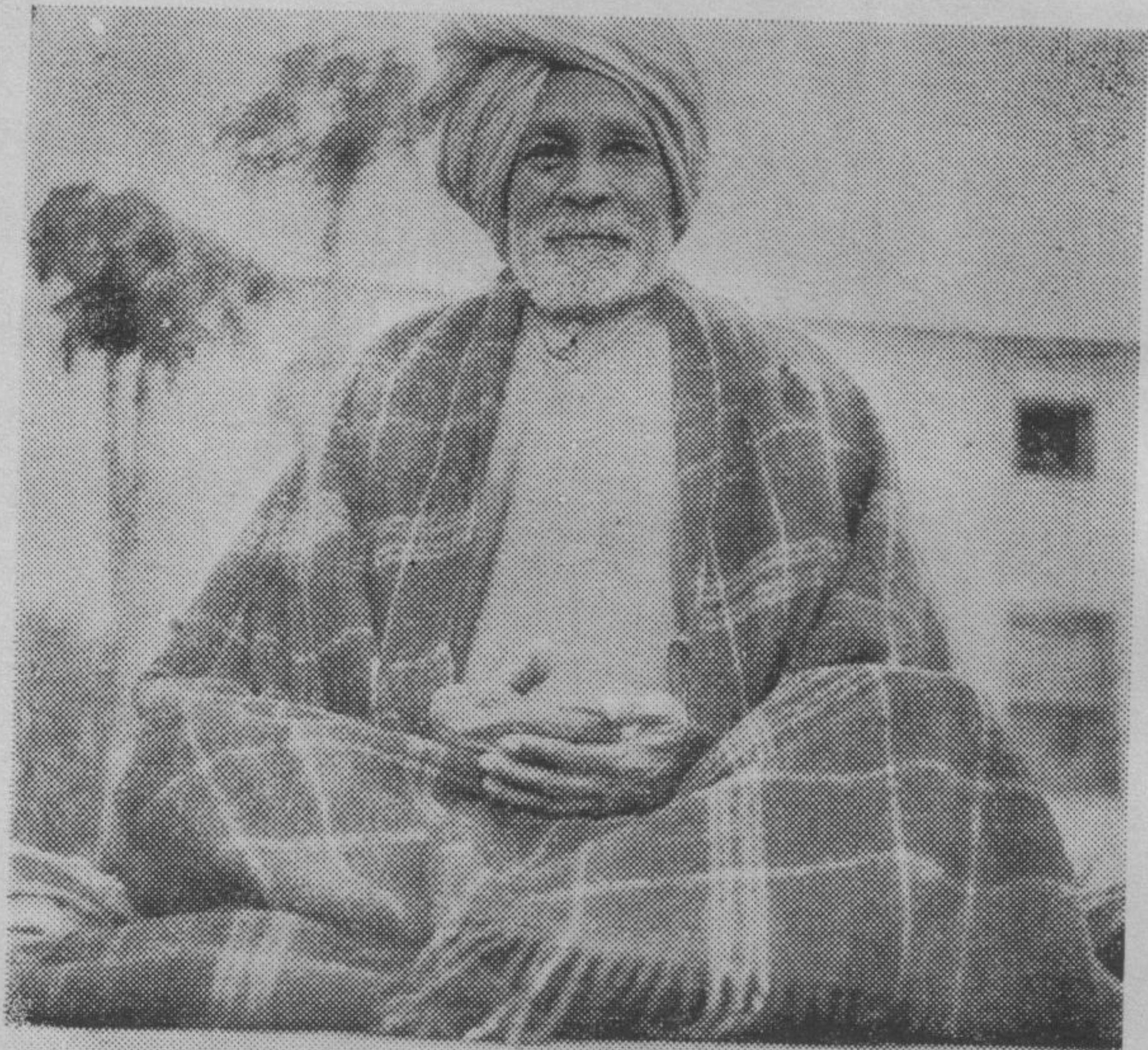
महातमा श्री नारायण स्वामी जी महाराज
से सन्न्यास में दीक्षित

जिन के पुण्य मय प्रश्रय में, जिन की छत्र-छाया में रहते हुए आर्ष शास्त्रों, आर्ष पाठविधि योगानुशीलन तथा त्याग वैराग्य प्राप्त करने के प्रशिक्षण का सुयोग मिला।

चरणरज
—सच्चिदानन्द स्वामी योगी
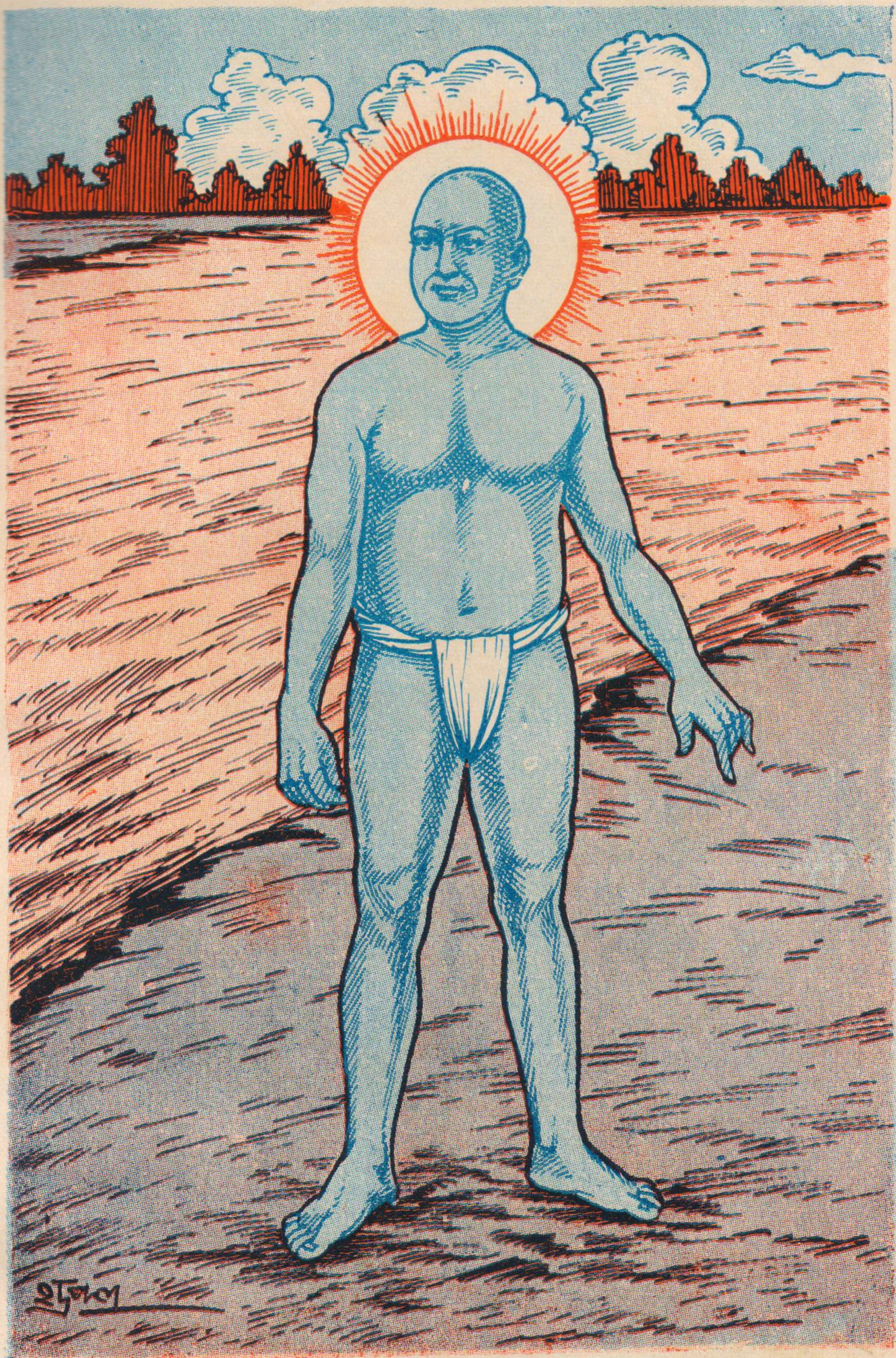
घोर तपस्वी, अवधूत, मौनी दयानन्द योगी के तपोबल से संसार का अज्ञानान्धकार छिन्न-भिन्न हुआ। (पृष्ठ २३)

अहिंसा-सिद्ध अवधूत योगी दयानन्द मगर मच्छ से स्नेह मुद्रा में (पृष्ठ ३२)

नाना साहब के बिठूर के महलों के विध्वस और बाघेरों की वीरता के साक्षात्,-कर्ता सन् ५७ की क्रान्ति के सूत्रधार दयानन्द

(पृष्ठ ११४)

बलमसि बलम्मयि धेहि । वेद

डूबतों का परित्राणकर्ता बाल ब्रह्मचारी योग साधक दयानन्द यति

(पृष्ठ १०४,१०५)
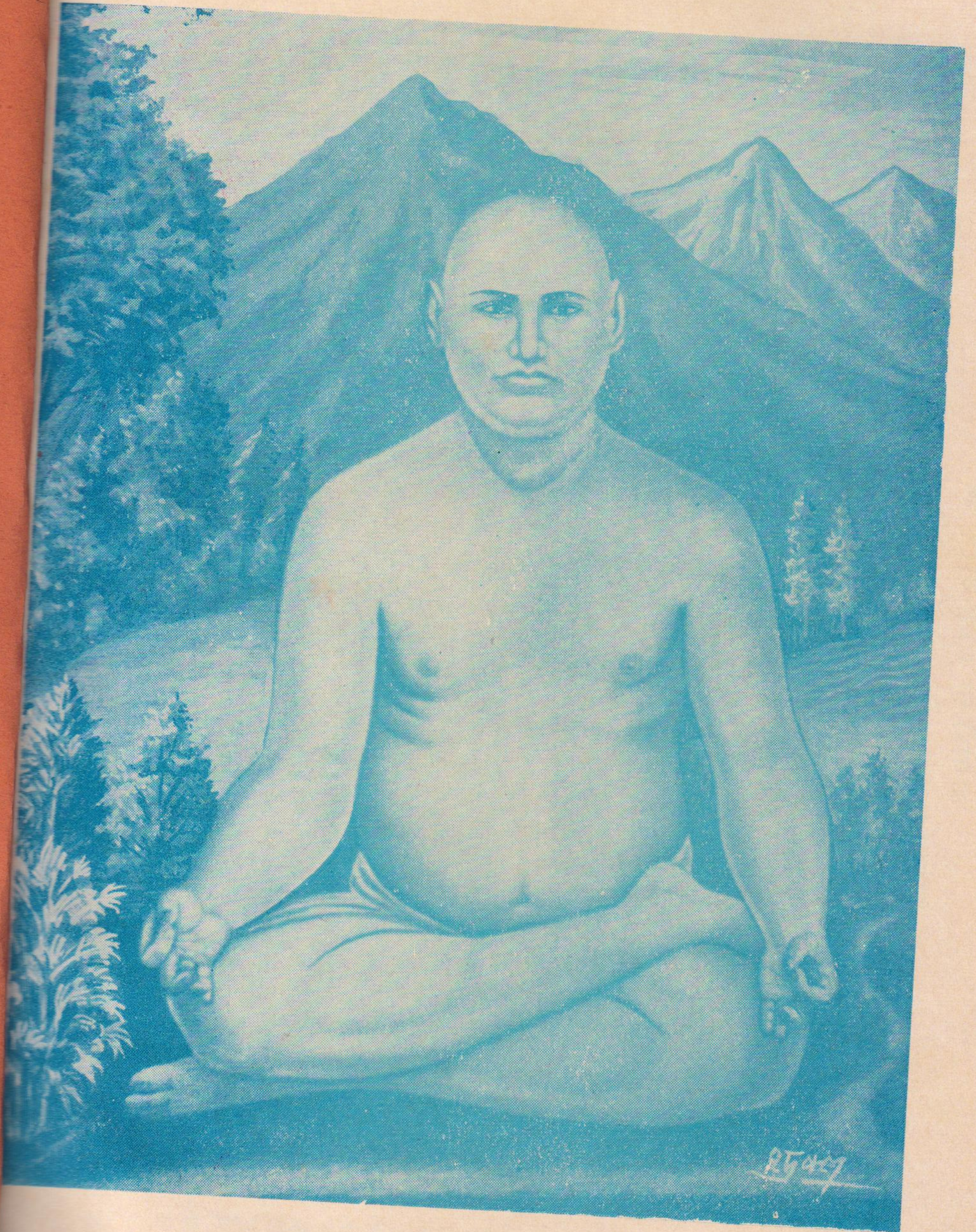
योगेश्वर महर्षि दयानन्द सरस्वती

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।वेद
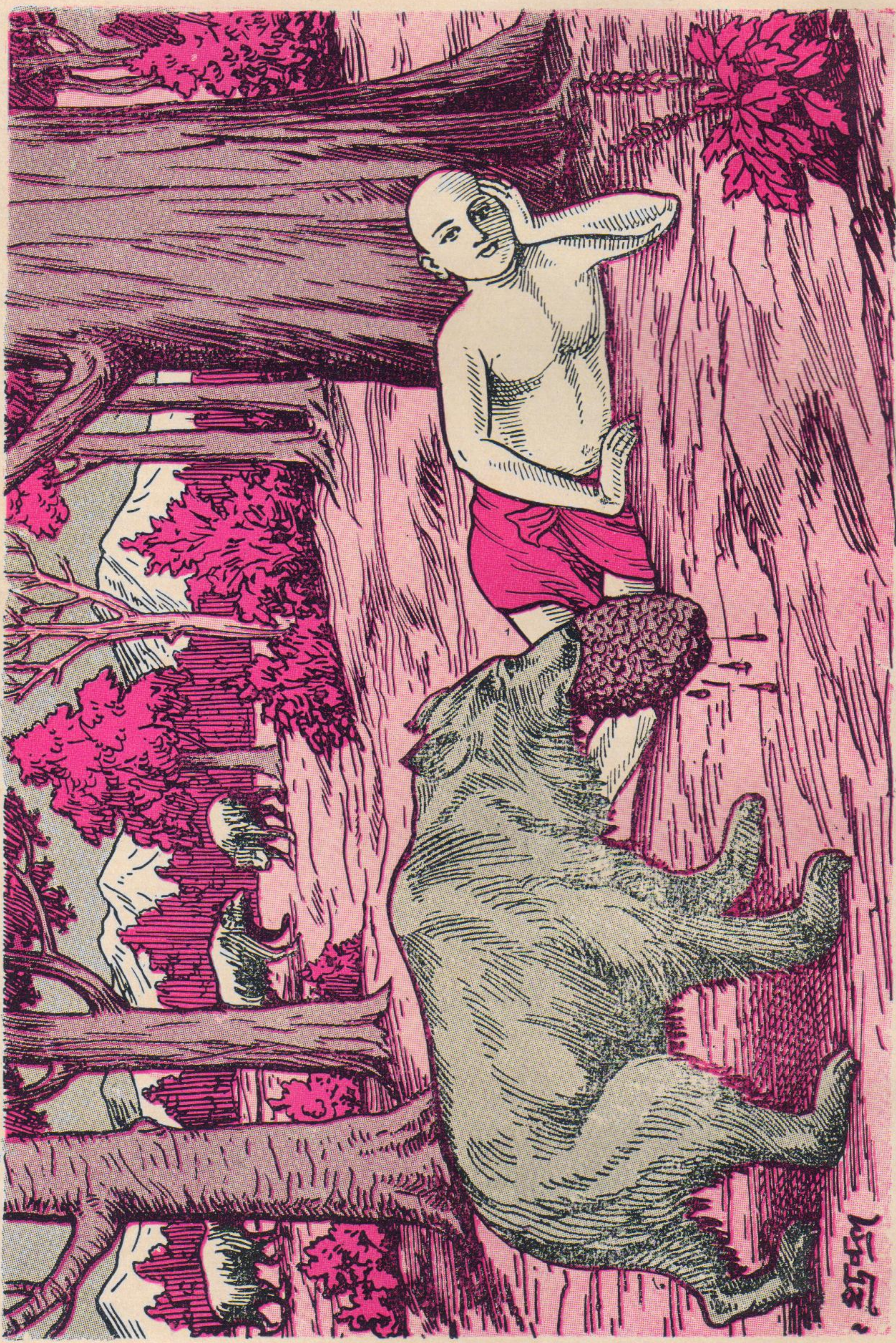
यति दयानन्द के लिये भालु मधु से परिपूर्ण छत्ता छोड़ रहा है।

(पृष्ठ ४२)
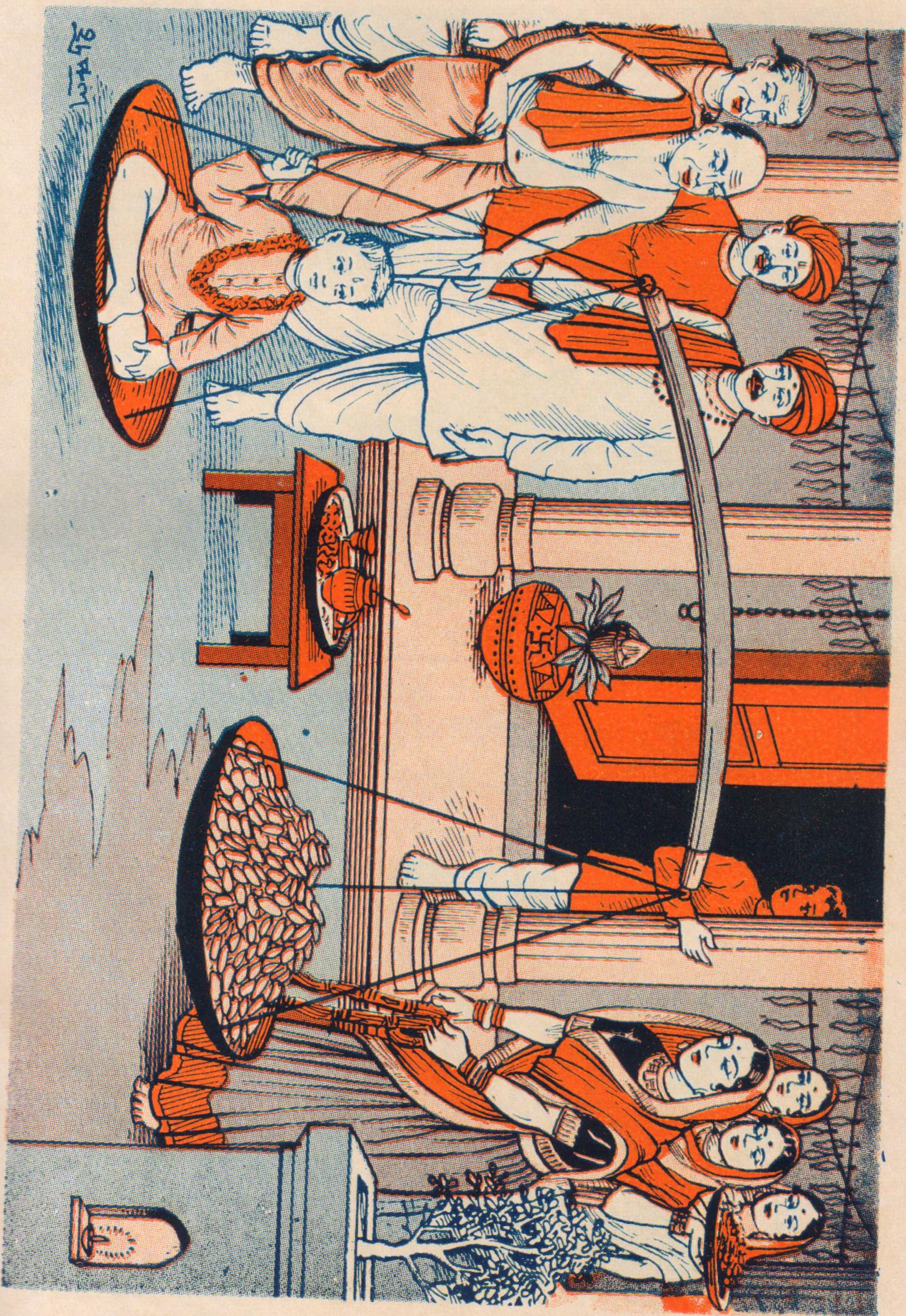
शिशु दयानन्द का स्वर्ण-रजत तुलादान

(पृष्ठ ११)
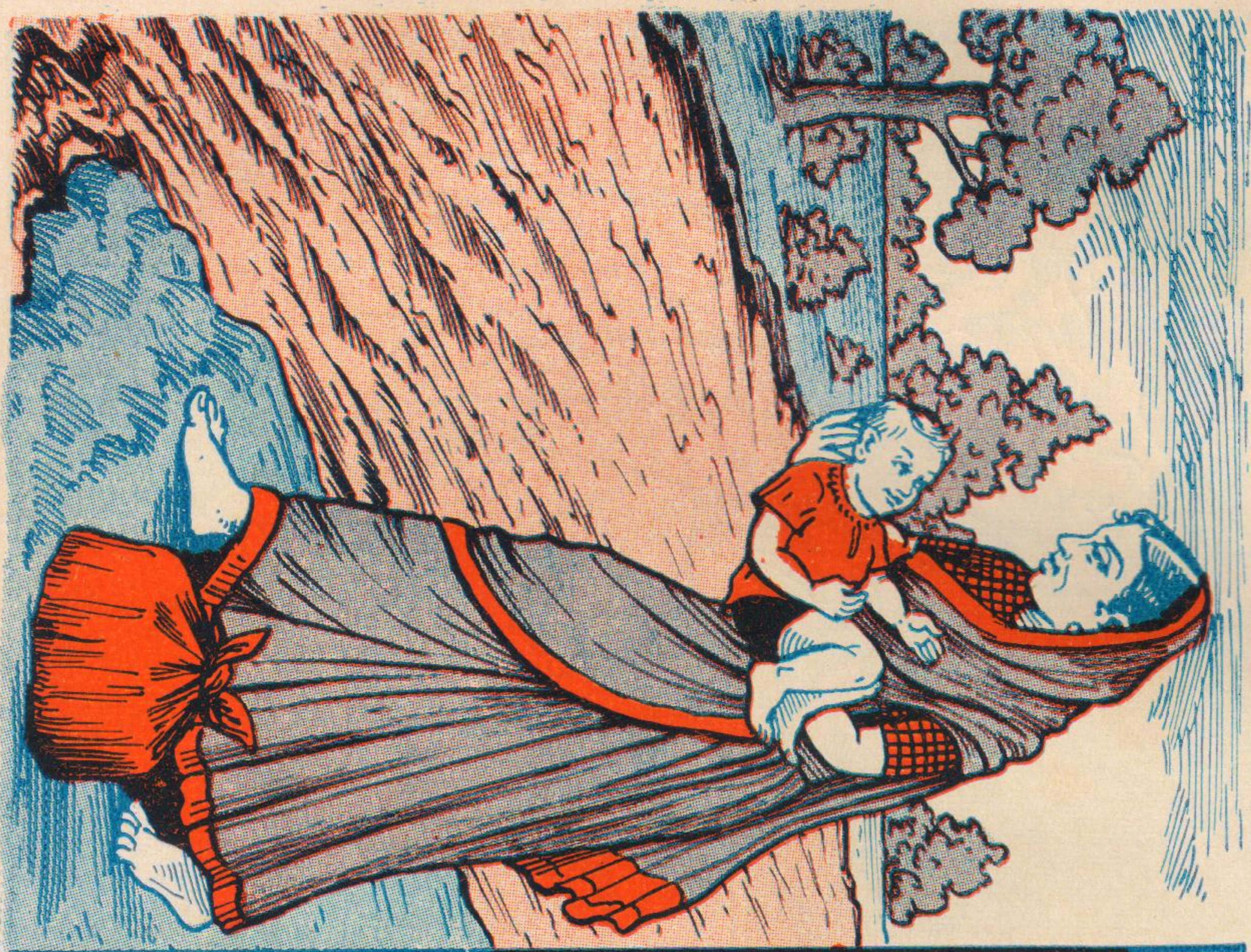
नदी में प्रवाह्यमान शिशु दयानन्द मुस्का दिया

शिशु दयानन्द की मुस्कान से विक्षिप्त धाया (पृष्ठ १२)

वारङ्गा नाला पर काल भैरव को नर-बलि

नर-बलि के लिये उपहृत ब्राह्मण बालक व ब्राह्मणी के परित्राणार्थ आत्म-बलिदान के लिये
दयालु दयानन्द की दयार्द्रता।

(पृष्ठ ४१)
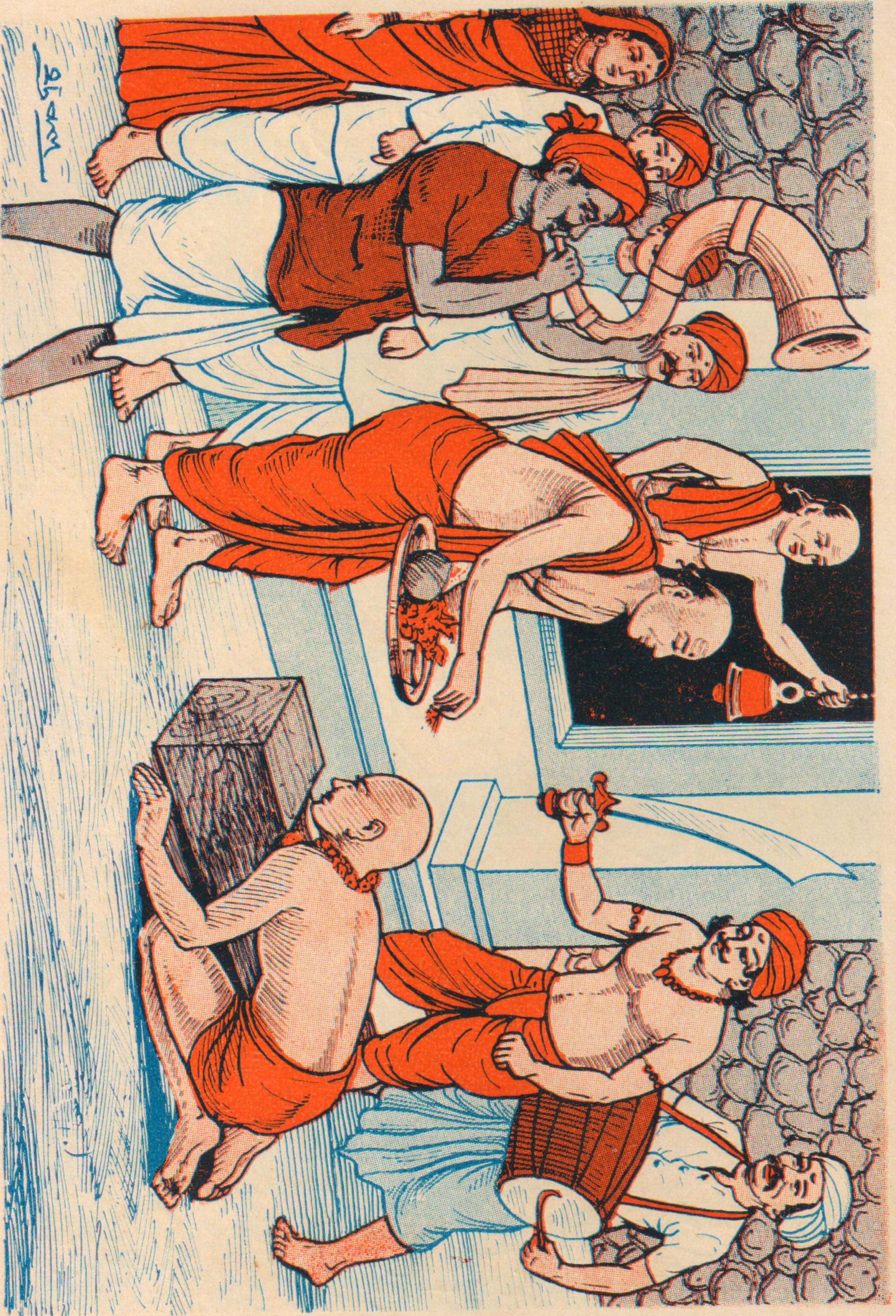
आत्म-बलि के लिये तत्पर देवदूत दयालु दयानन्द योग-यात्री (पृष्ठ ४०)

माता रुद्राणां पिता वसूनां० । वेद ।

ईश प्रणिधानी, योगी दयानन्द को दूध पिला कर ही गोमाता घर लौटी । (पृष्ठ १०३)

कोढ़ी के परित्राता योग साधक युवा दयानन्द

(पृष्ठ १०४)
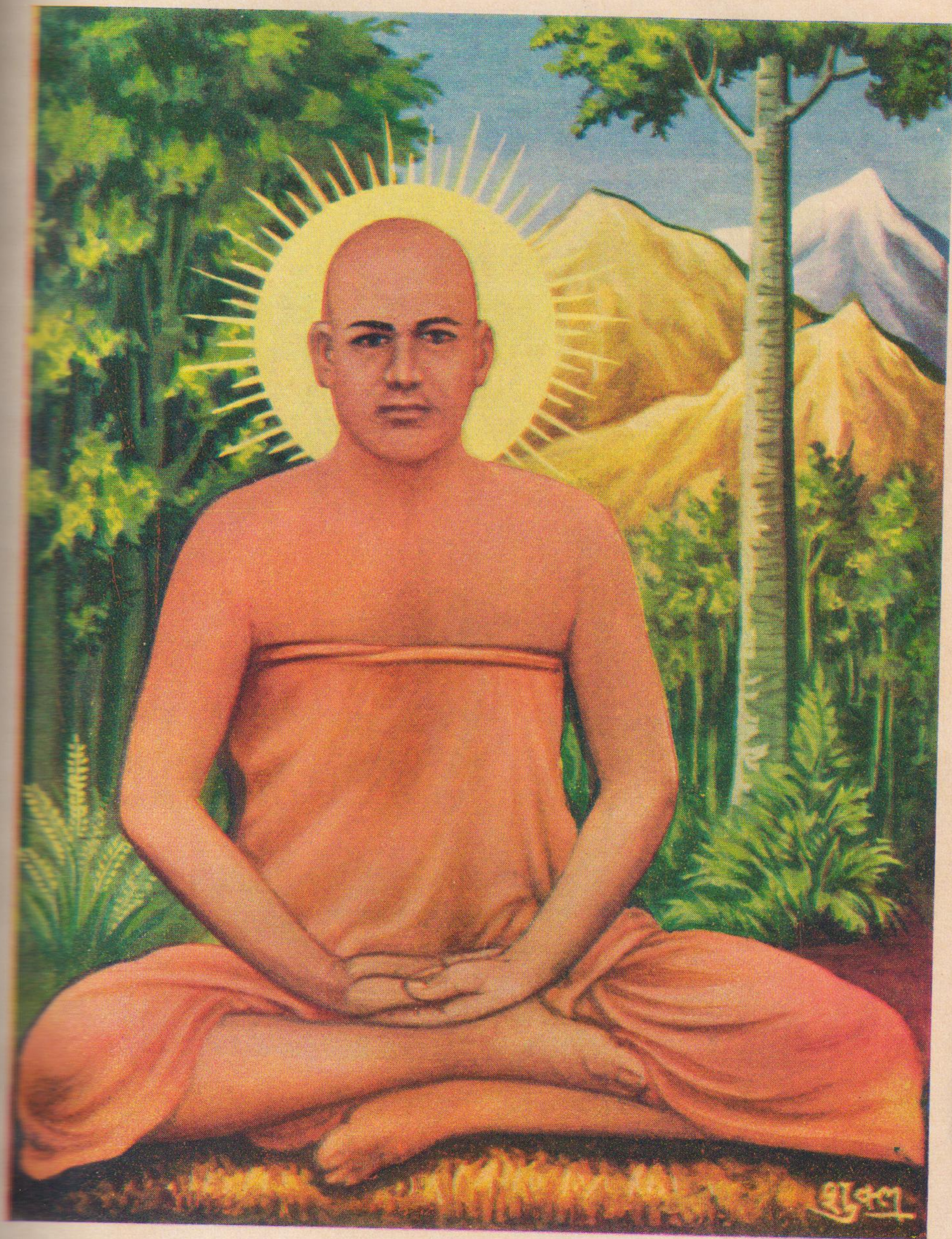
योगेश्वर महर्षि दयानन्द

सन् ५७ की क्रान्ति के होता नाना परिवार के गुरु

आत्मचरित्र उपदेष्टा

योगेश्वर भगवान् कृष्ण

महाभारत युद्ध के होता अर्जुन के गुरु
गीता-उपदेशक